10

धातु स्वर और प्रातिपदिक स्वर

वैदिक वाङ्मय में स्वर प्रकरण की अत्यधिक महानता का वर्णन है। भगवान पाणिनि के द्वारा रचित जो अष्टाध्यायी है, वहाँ वैदिक स्वर विषयक सूत्रों की प्रधानता छठे अध्याय से आरम्भ करके ग्रन्थ की समाप्ति तक इनका वर्णन है। इस पाठ में तो धातु से विहित स्वरों का और प्रातिपदिक से विहित स्वरों के विषय में आलोचना की है। और वहाँ भी उदात्त स्वर विषय में ही प्रधान रूप से आलोचना की है। उदाहरण में कहाँ पर उदात्त स्वर होता है इसकी प्रक्रिया आगे दिखाई गई है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे :

- धातु से विहित स्वरों के विषय में जान पाने में;
- प्रातिपदिक से विहित स्वरों को जान पाने में;
- उदात्त स्वर विषय में जान पाने में;
- स्वर प्रक्रिया को समझ पाने में;
- स्वर विषय में दक्ष हो पाने में;
- सूत्रों के अर्थ निर्णय करने में समर्थ हो पाने में;
- सूत्रों की व्याख्या कर पाने में;
- अनुवृत्ति आदि से सूत्र के अर्थ का निर्णय कर पाने में।

अथ धातु के स्वर

10.1 धातोः॥ (६.१.१६२)

सूत्र का अर्थ – धातु का अन्त उदात्त होता है।

सूत्र की व्याख्या – यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में उदात्त स्वर का विधान किया है। इस सूत्र में षष्ठ्यन्त का एक ही पद है 'धातोः'। इस सूत्र में 'कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः' इस सूत्र से अन्तः उदात्तः इन दो पद की अनुवृति आती है। उदात्त अनुदात्त आदि अच् को ही सम्भव होते हैं, अतः अन्तिम अच् यह अर्थ प्राप्त होता है। उससे सूत्र का अर्थ होता है, धातु का अन्त अच् उदात्त होता है।

उदाहरण– अस्य उदाहरणं भवति गोपायर्त नः इति, असिं सत्यः इति च।

सूत्र अर्थ का समन्वय– गुप् धातु से पकार से उत्तर ऊकार की इत् संज्ञा और 'तस्य लोपः' इससे लोप होने पर गुप् इस स्थिति में इस धातु का एक ही अच् विद्यमान है, उससे जैसे किसी का यदि एक ही पुत्र होता है, तो वह ही आदि, वह ही अन्त है, उसी प्रकार यहाँ भी गुप् धातु के गकार से उत्तर उकार ही आदि उकार ही अन्त है, अतः इस अकार का प्रकृत सूत्र से उदात्त स्वर होता है। उस गुप्-इस धातु से आय प्रत्यय करने पर उससे निष्पन्न गोपाय इस पकार से उत्तर आकार की 'आद्युदात्तश्च' इससे आद्युदात्त स्वर होता है। 'सनाद्यन्ता धातवः' इससे गोपाय- इसकी धातु संज्ञा है, अतः उस अन्त अकार की भी प्रकृत सूत्र से उदात्त स्वर होता है। उसके बाद गोपाय धातु लोट् लकार मध्यम पुरुष एकवचन में थस् प्रत्यय करने पर गोपाय थस् इस स्थिति में गोपाय-धातु को शप् आदेश अनुबन्ध लोप होने पर गोपाय अ थस् इस स्थिति में शप् के अकार की 'अनुदात्तौ सुप्पितौ' इससे अनुदात्त स्वर होता है। यकार से उत्तर अकार का और शप् से उत्तर अकार का 'अतो गुणे' इससे पररूप एकादेश होता है, और उसको 'एकादेश उदात्तेनोदात्तः' इससे उदात्त स्वर होता है। उसके बाद थसः तम् यह आदेश होते हैं, उसका अत् उपदेश परे होने से 'तास्यानुदात्तेन्ङिदुपदेशात्' इससे अनुदात्त स्वर होता है, वहाँ 'उदात्तानुदात्तस्य स्वरितः' इससे तकार से उत्तर अकार को स्वरित स्वर इस प्रकार गोप्पाध्यतम् यह रूप सिद्ध होता है। असिं सत्यः यहाँ पर अस्-धातु से मध्यम पुरुष एकवचन में सिप् प्रत्यय करने पर अनुबन्ध लोप होने पर अस् सि इस स्थिति में 'तासस्त्योर्लोपः' इससे सकार के लोप होने पर अकार को उदात्त स्वर, और उससे परे स्वरित स्वर होता है। सकार के लोप होने पर 'उदात्तस्वरितपरस्य.' इससे अनुदात्त स्वर होता है।

10.2 स्वपादिहिंसामच्यनिटि॥ (६.१.१८८)

सूत्र का अर्थ – स्वपादि धातुओं को तथा हिंस धातु के अजादि अनिट् सार्वधातुक परे हो, तो विकल्प से आदि को उदात हो जाता है।

सूत्र की व्याख्या– विधिसूत्र है। इस सूत्र से उदात्त स्वर का नियम किया है। इस सूत्र में तीन पद है, स्वपादिहिंसाम् अचि अनिटि ये सूत्र में आये पदच्छेद हैं। स्वपादिसहिंसाम् यह षष्ठी बहुवचनान्त

टिप्पणियाँ

है, अचि यह सप्तम्यन्त है, अनिटि यह सप्तम्यन्त पद है। इट् नहीं अनिट् उस अनिट् में इट् से भिन्न में यह अर्थ है। स्वप्-धातुः आदि में जिसके वह स्वपादि, स्वपादि और हिंस् स्वपादिहिंसः छन्द में बहुवचन है, उन स्वपादि हिंसा को। स्वपादिगण अदादिगण के अन्तर्गत एक गण है, वहाँ पढ़ी हुई धातुओं को और हिंस्-धातु को यह अर्थ है। इस सूत्र में 'कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः' इस सूत्र से उदात्तः इस प्रथमान्त पद की अनुवृति आ रही है। तास्यनुदात्तेन्ङिदुपदेशाल्लसार्व धातुकमनुदात्त -मन्ङ्वङोः इस सूत्र से सार्वधातुकम् इस पद की अनुवृति आ रही है। वह यहाँ सप्तम्यन्त से विपरीत का ग्रहण किया है। सार्वधातुकम् इस लकार के स्थान में हुआ यह अर्थ है। उससे तिङ्, शतृ-शानच् ये ग्रहण करते है। आदिः सिचोऽन्यतरस्याम् इससे आदिः इस पद की और अन्यतरस्याम् इस अव्यय पद की अनुवृति आती है। अचि यहाँ पर लसार्वधातुक में इसका विशेषण है उससे 'यस्मिन् विधिस्तदादावल्ग्रहणे' इस परिभाषा से उसके आदि में विधि होती है, उससे अजादि में लसार्वधातुक यह प्राप्त होता है। उससे इस सूत्र का अर्थ होता है- स्वपादि धातुओं को और हिंस्-धातु को इट् से भिन्न में अजादि लसार्वधातुक परे आदि उदात्त विकल्प से होता है।

उदाहरण- अस्य उदाहरणानि- स्वपन्ति, श्वसन्ति, हिंसन्ति इत्यादीनि।

सूत्र अर्थ का समन्वय- स्वप्-धातु और श्वस्-धातु स्वपादिगण में पढ़ी हुई हैं। रुधादिगण की हिंस्-धातु भी प्रकृत सूत्र में ग्रहण की है। उससे इन धातुओं के प्रथमपुरुष, बहुवचन की विवक्षा में झि प्रत्यय करने पर झि को अन्त आदेश होने पर प्रक्रिया कार्य में स्वप् अन्ति, श्वस् अन्ति, हिंस् अन्ति इस प्रकार होने से इट् भिन्न का अजादि लसार्वधातुक परे होने पर प्रकृत सूत्र से धातुओं का आदि अच् विकल्प से उदात्त होता है। यहाँ उदात्त स्वर के विकल्प होने से उसके अभाव पक्ष में प्रत्यय स्वर निमित्त करने पर मध्य में उदात्त स्वर होता है।

विशेष- वृत्तिकार के अनुरोध से कित् और ङित् के परे ही यह आद्युदात्त स्वर होता है। सूत्र में अचि इस पद ग्रहण से स्वप्यात्, हिंस्याद् इत्यादि में आद्युदात्त स्वर नहीं होता है अजादि लसार्वधातुक के अभाव होने से। सूत्र में अनिट्-इसके ग्रहण से इट् सहित लसार्वधातुक के परे यह सूत्र कार्य नहीं करता है। जैसे स्वपितः, श्वसितः इत्यादि में इट् आगम के विद्यमान होने से आद्युदात्त स्वर नहीं होता है।

10.3 अभ्यस्तानामादिः॥ (६.१.१८९)

सूत्र का अर्थ- अजादि लसार्वधातुक परे हो, तो अभ्यस्त संज्ञको के आदि को उदात्त होता है।

सूत्र की व्याख्या- विधिसूत्र है। इस सूत्र से अभ्यस्तनाम् आदि में उदात्त स्वर का विधान है। इस सूत्र में दो पद है, अभ्यस्तानाम् आदिः ये सूत्र में आये पदच्छेद है। अभ्यस्तानाम् यह षष्ठी बहुवचनान्त है, आदिः यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। धातु को जब द्वित्व होता है, तब वह समुदाय अभ्यस्त संज्ञक होता है। इस सूत्र मे 'कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः' इस सूत्र से उदात्तः इस प्रथमान्त पद की अनुवृति आती है। उदात्त अनुदात्त आदि अच् ही सम्भव होते हैं इसलिए अच् ही प्राप्त होता है। 'स्वपादिहिंसामच्यनिटि' इससे अचि अनिटि इन दो सप्तम्यन्त पद की अनुवृति आती है। जो

इट् नहीं है वह अनिट् उस अनिट् में इट् से भिन्न में यह अर्थ है। 'तास्यनुदात्तेन्ङिददुपदेशाल्लसार्वधातुकम - नुदात्तमन्ङ्वडोः' इस सूत्र से लसार्वधातुकम् इस पद की अनुवृति आती है और वह यहाँ सप्तम्यन्त से विपरीत आती है। लसार्वधातुकम् यहाँ लकार के स्थान में हुआ है यह अर्थ है। उससे तिङ्- शतृ-शानच्-इत्यादि का ग्रहण करते है। अचि यह सार्वधातुक इसका विशेषण है, उससे 'विधिस्तदादावल्ग्रहणे' इस परिभाषा से उसके आदि में विधि होती है, उससे अजादि लसार्वधातुक में यह अर्थ प्राप्त होता है। उससे सूत्र का अर्थ होता है इट् से भिन्न में अजादि लसार्वधातुक परे अभ्यस्त संज्ञको के आदि अच् उदात्त होते हैं।

उदाहरण- इसका उदाहरण है - बिभ्रंती जराम्।(तै.सं-४-३-११-५)। यदाहवनी जुह्वघति। (तै.ब्रा.१-१-१०-५)।

सूत्र अर्थ का समन्वय- बिभ्रंती यहाँ पर 'डुभृञ् धारणपोषणयोः' इस धातु से शतृ प्रत्यय करने पर व अनुबन्ध लोप करने पर 'कर्तरि शप्' इससे शप् प्रत्यय करने पर 'जुहोत्यादिभ्यः श्लुः' इससे शप् का लोप होने पर 'श्लौ' इस सूत्र से धातु को द्वित्व होता है। उस समुदाय की अभ्यस्त संज्ञा होती है। उसके बाद 'पूर्वोऽभ्यासः' इससे पूर्व की अभ्यास संज्ञा होने पर 'भृञामित्' इससे अभ्यस्त अच् ऋकार के इकार में 'अभ्यासे चर्च' इससे भकार के जश्त्व होने पर वकार में बिभृ अत् इस स्थिति में 'इको यणचि' इससे ऋकार के रकार में निष्पन्न बिभ्रत् इसके शत्रन्त होने से 'स्त्रियाम्' 'उगितश्च' इससे ङीप् में अनुबन्ध लोप ईकार करने पर बिभ्रती यह रूप बनता है। यहाँ इस धातु के अभ्यस्त होने से प्रकृत सूत्र से आदि स्वर उदात्त होता है।

जुह्वति यहाँ पर 'हु दानादानयोः' इस धातु से लट्-लकार में प्रथम पुरुष का बहुवचन में झि प्रत्यय करने पर पूर्व के समान श्लु प्रत्यय करने पर पूर्व के समान द्वित्व होता है। उससे यह धातु अभ्यस्त संज्ञक है। और उस अभ्यास संज्ञा में हु हु झि इस स्थिति में 'कुहोश्चुः' इससे हकार के स्थान में झकार करने पर 'अभ्यासे चर्च' इससे झकार के स्थान में जकार करने पर 'जु हु झि 'इस स्थिति में 'अदभ्यास्तात्' इससे झकार के स्थान में अद आदेश होने पर जुहु अति इस स्थिति में 'हुश्नुवोः सार्वधातुके' इससे हु-इसके उकार के स्थान में वकार करने पर जुह्वति यह रूप सिद्ध होता है। यहाँ पर प्रकृत सूत्र से इस धातु के आदि अच् को उदात्त होता है।

ये ददति प्रिया वसु इति दधाना इन्द्रे इत्यादीन्यपि ये इसके उदाहरण है। यहाँ दधाना यहाँ पर 'चितः' इससे अन्त को उदात्तस्वर किया है। परन्तु आठवे अध्याय में 'चितः' इस सूत्र की अपेक्षा से इस सूत्र के परे होने से अन्त उदात्त स्वर को बांधकर इस सूत्र से आद्युदात्त स्वर होता है।

विशेष- 'आदिः सिचोऽन्यतरस्याम्' इस सूत्र से इस सूत्र में 'आदिः' इस पद की अनुवृति आती है, फिर भी यहाँ आदि इस पद को ग्रहण करने से आद्युदात्त स्वर का नित्य विधान किया है, अन्यथा आदि ग्रहण अभाव में उस सूत्र से ही (आदिः सिचोऽन्यतरस्याम्) अन्यतरस्याम् इसकी अनुवृति आयेगी, उससे इस सूत्र को आद्युदात्त स्वर विकल्प से होगा, वैसा न हो इसलिए यहाँ पर आदि ग्रहण किया है ऐसा जानना चाहिए।

टिप्पणियाँ

10.4 अनुदात्ते च॥ (६.१.१९०)

सूत्र का अर्थ- जिसमे उदात्त अविद्यमान हो ऐसे लसार्वधातुक के परे रहते भी अभ्यस्त संज्ञको के आदि को उदात्त होता है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से उदात्त स्वर का विधान है। इस सूत्र में दो पद है। अनुदात्ते यह सप्तम्यन्त पद है। च यह अव्ययपद है। उदात्त नहीं है अनुदात्त है, उस अनुदात्त में यहाँ अविद्यमान उदात्त में यह अर्थ है। 'अभ्यस्तानामादिः' इस सूत्र से अभ्यस्तानाम् यह षष्ठी बहुवचनान्त पद है, और आदिः यह प्रथमान्त पद की यहाँ पर अनुवृति आती है। धातु को जब द्वित्व होता है, तब उस समुदाय की अभ्यस्त संज्ञा होती है। इस सूत्र में 'कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः' इस सूत्र से उदात्तः इस प्रथमान्त पद की अनुवृति आती है। उदात्त अनुदात्त आदि अच् को ही सम्भव है, अतः अच् ही प्राप्त होते हैं। 'तास्यनुदात्तेन्ङिदुपदेशाल्लसार्वधातुकमनुदात्तमन्ङ्वडोः' इस सूत्र से लसार्वधातुकम् इस पद की अनुवृति यहाँ आती है, और वह यहाँ पर सप्तम्यन्त से विपरीत है। लसार्वधातुकम् इसके लकार के स्थान में हुआ यह अर्थ है। उससे तिङ्-शतृ-शानच्-इनका ग्रहण होता है। लसार्वधातुकम् यहाँ पर सप्तमी निर्देश होने से 'तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य' इससे उसके परे होने पर पूर्व का कार्य भी जाना जाता है। इस प्रकार इस सूत्र का अर्थ होता है यहाँ पर जहाँ उदात्त स्वर नहीं है, उस प्रकार के लसार्वधातुक के परे अभ्यस्त संज्ञक धातुओं के आदि अच् उदात्त होता है।

उदाहरण- इसका उदहरण होता है - दधासि रत्नं द्रविणं च दाशुषे इति।

सूत्र अर्थ का समन्वय- यहाँ दधासि इसमें धा धातु से मध्यमपुरुष एकवचन में सिप् प्रत्यय करने पर धा सिप् इस स्थिति में शप् और उसका 'जुहोत्यादिभ्यः श्लुः' इससे लोप करने पर 'श्लौ' इससे धा धातु को द्वित्व होता है, उससे इस धातु को द्वित्व होने से यह धातु अभ्यस्त संज्ञक है। वहाँ पूर्व के समान इस अभ्यास संज्ञा में 'ह्रस्वः' इससे अभ्यास के अच् को ह्रस्व करने पर और उसके बाद जश्त्व करने पर दधा सिप् इस स्थिति में सिप् के पित् होने से 'अनुदात्तौ सुप्पितौ' इससे सकार से उत्तर इकार की अनुदात्त संज्ञा होती है। उससे 'ति' इसकी उदात्त भिन्न की लसार्वधातुक के परे होने से पूर्व अभ्यस्त संज्ञक धा धातु के आदि अच् दकार से उत्तर अकार की प्रकृत सूत्र से उदात्त स्वर सिद्ध होता है।

10.5 भीह्रीभृहुमदजनधनदरिद्राजागरां प्रत्ययात्पूर्व पिति॥ (६.१.१९२)

सूत्र का अर्थ - भी आदि के अभ्यस्त को पित लसार्वधातुक के परे रहते प्रत्यय से पूर्व को उदात्त होता है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से उदात्त स्वर होता है। इस सूत्र में चार पद है। भीह्रीभृहुमदजनधनदरिद्राजागराम् यह षष्ठी बहुवचनान्त है, प्रत्ययात् यह पञ्चमी एकवचनान्त है, पूर्वम् यह प्रथमा एकवचनान्त है, पिति यह सप्तमी एकवचनान्त पद है। इस सूत्र में 'कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः' इस सूत्र से उदात्तः इस प्रथमान्त पद की अनुवृति आती है। अभ्यस्तानामादिः

इस सूत्र से अभ्यस्तानाम् इस षष्ठी बहुवचनान्त पद की यहाँ अनुवृति आ रही है। धातु को जब द्वित्व होता है, तब द्वित्व विशिष्ट धातु अभ्यस्त संज्ञक होती है। तास्यनुदात्तेन्ङिदुपदेशाल्लसार्वधातुकमनुदात्तमन्ङ्वडोः इस सूत्र से लसार्वधातुकम् इस पद की अनुवृति आती है और वह यहाँ पर सप्तम्यन्त से विपरिणाम है। लसार्वधातुकम् इसके लकार के स्थान हुआ है। उससे तिङ्- शतृ-शानच्-इन पदों का ग्रहण होता है। लसार्वधातुके यहाँ पर और पिति यहाँ पर सप्तमी निर्देश होने से 'तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य' इससे उसके परे होने पर पूर्व के कार्य होता है ऐसा जाना जाता है। उससे इस सूत्र का अर्थ होता है- भी, ह्री, भृहु, मद, जन, धन, दरिद्रा, और जागृ धातु के अभ्यस्तो को पित लसार्वधातुक के परे रहते प्रत्यय से पूर्व को उदात्त होता है।

उदाहरण- इसका उदाहरण होता है - योऽग्निहोत्रं जुहोति।

सूत्र अर्थ का समन्वय- हु धातु से लट् लकार में प्रथमपुरुष एकवचन में तिप् प्रत्यय करने पर पकार की 'हलन्त्यम्' इस सूत्र से इत्संज्ञा होने पर 'तस्य लोपः' इससे लोप करने पर द्वित्व आदि कार्य करने पर 'जुहो ति' इस स्थित्ति में तिप् का तिङ्प्रत्ययो में पाठ होने से 'तिङ्शित्सार्वधातुकम्' इससे तिप् की सार्वधातुक संज्ञा सिद्ध होती है। और इस प्रकार पित् में सार्वधातुक संज्ञक में तिप् प्रत्यय के परे होने पर पूर्व के हकार से उत्तर ओकार की प्रकृत सूत्र से उदात्त स्वर सिद्ध होता है।

10.6 लिति॥ (६.१.१९३)

सूत्र का अर्थ- ल जिसका इत् सज्ञक हो, ऐसे प्रत्यय से पूर्व को उदात्त होता है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से उदात्त स्वर होता है। इस सूत्र में लिति यह सप्तम्यन्त एक ही पद है। लकार है इत् जिसका वह लित्, उस अर्थ में। लिति यहाँ पर सप्तमी निर्देश होने से 'तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य' इससे लित के परे पूर्व के कार्य को जानना चाहिए। इस सूत्र में 'कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः' इस सूत्र से उदात्तः इस प्रथमान्त पद की अनुवृति आती है। प्रथमान्त होने से यह विधान करने वाला पद है। 'भीह्रीभृहुमदजनधनदरिद्राजागरां प्रत्ययात् पूर्वं पिति' इस सूत्र से प्रत्ययाद् इसोंपञ्चम्यन्त, और पूर्वम इस प्रथमान्त पद की अनुवृति आती है। उससे सूत्र का अर्थ होता है - लित प्रत्यय के परे पूर्व स्वर को उदात्त होता है।

उदाहरण- इसका उदाहरण होता है - चिकीर्षकः इति, यत्र बाणाः (तै.सं.-४-६-४-५) इति च।

सूत्र अर्थ का समन्वय- कृ धातु को सन् प्रत्यय करने पर द्वित्वादि कार्य करने में 'चिकीर्ष' इस स्थिति में, वहाँ ण्वुल् प्रत्यय करने पर तथा अनुबन्ध लोप करने पर 'चिकीर्ष वु' इस स्थत्ति में 'युवोरनाकौ' इस सूत्र से वु को अक् आदेश करने पर षकार से उत्तर अकार के लोप होने पर 'चिकीर्ष्अक' इस स्थिति में ण्वुल् प्रत्यय के लित् होने से, उसके परे पूर्व के ककार से उत्तर ईकार की प्रकृत सूत्र से उदात्त स्वर का विधान है। वहाँ सभी के संयोग करने पर और विभक्ति आदि कार्य करने पर चिकीर्षक यह रूप सिद्ध होता है। यत् शब्द से 'सप्तम्यास्त्रल्' इससे त्रल् प्रत्यय करने पर त्रल् प्रत्यय का लित् होने से उससे पूर्व के यकार से उत्तर अकार की प्रकृत सूत्र से उदात्त स्वर सिद्ध होता है।

पाठगत प्रश्न 10.1

1. धातु के अन्त में क्या स्वर होता है?
2. स्वपादिगण किस गण के अन्तर्गत गण है?
3. अभ्यस्तानामादिः इस सूत्र का क्या अर्थ है?
4. अनुदात्ते च इसका क्या अर्थ है?
5. जुहोति यहाँ पर हकार से उत्तर ओकार का क्या स्वर है?
6. यत्र यहाँ पर यकार से उत्तर अकार का उदात्त स्वर किस सूत्र से होता है?

अथ प्रातिपदिक स्वर

10.7 कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः॥ (६.१.१५९)

सूत्र का अर्थ- कृष विलेखने धातु तथा आकारवान जो घञन्त शब्द उनके अन्त को उदात होता है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से उदात्त स्वर का विधान होता है। इस सूत्र में चार पद विद्यमान है। कर्षात्वतः यह षष्ठी एकवचनान्त पद है, घञः यह भी षष्ठी एकवचनान्त है, अन्तः यह प्रथमा एकवचनान्त है, उदात्तः यह भी प्रथमा एकवचनान्त पद है। कर्षात्वतः यहाँ पर 'कर्षश्च आत्वतश्च, इस प्रकार का विग्रह है। कर्ष धातु को और आकार युक्त धातु को यह अर्थ है। घञः यह कर्षात्वतः इसका विशेषण है, उससे तदन्त विधि से घञन्त कर्ष तथा आकार धातु से यह अर्थ प्राप्त होता है। उदात्त अनुदात्त आदि अच् ही हो सकते हैं, अतः अच् इसका भी यहाँ संयोग है। उससे इस सूत्र का अर्थ होता होता है- घञन्त कर्ष धातु और घञन्त आकार युक्त ध ातु से अन्त अच् उदात्त होता है।

उदाहरण- इसका उदाहरण है- कर्षः इति, दायः इति च।

सूत्र अर्थ का समन्वय- कृष् विलेखने इस धातु से घञ् प्रत्यय करने पर कर्षः यह रूप बनता है। यहाँ घञन्त कर्ष-इसके अन्त के षकार से उत्तर अकार का प्रकृत सूत्र से उदात्त स्वर होता है।

दा दाने इस आकार युक्त धातु से 'आतो युक्चिण्कृतोः' इससे घञ् प्रत्यय करने पर दायः यह रूप बनता है। यहाँ आकार होने से घञन्त दाय-इसके अन्त यकार से उत्तर अकार को प्रकृत सूत्र से उदात्त स्वर सिद्ध होता है।

विशेष- घञन्त शब्दो को 'ञ्नित्यादिर्नित्यम्' इससे आदि अच् को उदात्त स्वर होता है। परन्तु इस सूत्र को उसको अवरुद्ध करके घञन्त कर्ष धातु को और घञन्त आकार युक्त धातु को प्रकृत सूत्र से अन्त अच् उदात्त होता है।

प्रकृत सूत्र में 'कर्ष' यहाँ पर शप् प्रत्यय करने से (कृ+शप्) घञ् प्रत्यय से निर्देश नहीं होने से, उस तुदादि गण में जो कृ धातु है, उससे घञ् प्रत्यय करने पर तदन्त शब्द के अन्त अच् का प्रकृत सूत्र से उदात्त स्वर ही नहीं होता है, और भी 'ञ्नित्यादिर्नित्यम्' इससे आदि अच् को उदात्त स्वर होता है।

10.8 उञ्छादीनाञ्च॥ (६.१.१६०)

सूत्र का अर्थ- उच्छादि शब्दों को भी अन्तोदात्त होता है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से उदात्त स्वर का विधान है। इस सूत्र में दो पद है, उञ्छादीनाम् यह षष्ठी बहुवचनान्त है, च यह अव्यय पद है। इस सूत्र में 'कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः' इस सूत्र से अन्तः इस प्रथमान्त, और उदात्तः इस प्रथमान्त पद की अनुवृति आती है। उदात्त और अनुदात्त आदि अच् को ही सम्भव है, अतः अच् इस पद को जोड़ा जाता है। उञ्छः आदि है जिसका वह उञ्छादिः और उन उञ्छादियो का समूह। उञ्छादि एक गण है वहाँ - उञ्छ-म्लेच्छ-जञ्ज-जल्प-जप-वध-युग-वेग-वेद-इत्यादि शब्द है। इस गण में आठ गणसूत्र भी है। इस प्रकार इस सूत्र का अर्थ होता है, उञ्छादिगण में पढ़े हुए शब्दों के अन्त अच् उदात्त होता है।

उदाहरण- इस सूत्र के उदाहरण है - सत्यं ब्रवीमि वध इत् स तस्य (तै. ब्रा.२-८-८-७) इति। वैश्वानरः कुशिकेभिर्युगेयुगे इति, गावः सोमस्य प्रथमस्य भक्षः इति च।

सूत्र अर्थ का समन्वय- वध-यह शब्द उञ्छादिगण में पढ़ा हुआ है, अतः यहाँ प्रथम वाक्य में उस वध यहाँ पर धकार से उत्तर अकार को उदात्त स्वर होता है। युग शब्द उञ्छादिगण में पढ़े होने से उस 'कुशिकेभिर्युगेयुगे' यहाँ गकार से उत्तर एकार का प्रकृत सूत्र से उदात्त स्वर सिद्ध होता है। घञन्त भक्ष शब्द भी उञ्छादिगण में पढ़ा हुआ है, उससे 'गावः प्रथमस्य भक्षः यहाँ पर षकार से उत्तर अकार का प्रकृत सूत्र से उदात्त स्वर है।

विशेष - युञ्ज् धातु से घञ् प्रत्यय करने पर सिद्ध हुआ युग- यह शब्द उञ्छादिगण में पढ़ा हुआ है। यहाँ घञ् प्रत्यय के परे पूर्व 'पुगन्तलघूपदस्य च' इससे गुण प्राप्त था, परन्तु गणपाठ में इसी प्रकार के पाठ के होने से गुण का निषेध निपातन से किया है।

10.9 ञ्नित्यादिर्नित्यम्॥ (६.१.१९७)

सूत्र का अर्थ- ञकार और नकार इत् संज्ञक है जिनका ऐसे प्रत्ययों के परे रहते नित्य ही आदि उदात्त होता है।

टिप्पणियाँ

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से उदात्त स्वर का विधान है। इस सूत्र में तीन - तीन पद है। यहाँ ञ्निति यह सप्तमी एकवचनान्त, आदिः यह प्रथमा एकवचनान्त, नित्यम् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। ञ्निति इसके सप्तम्यन्त होने से 'तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य' इससे पूर्व के कार्य को जानना चाहिए। ञ्निति यहाँ पर 'ञ् च न् च ञ्नौ', ञ्नौ इत् है जिसके वह ञ्नित् उस ञ्नित में यहाँ पर ञित् में और नित् में यह अर्थ है। इस सूत्र में 'कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः' इस सूत्र से उदात्तः इस प्रथमान्त पद की अनुवृति आती है। उदात्तः इसके प्रथमान्त होने से इस विधायक पद को जाना जाता है। उससे इस सूत्र का अर्थ होता है - ञित् और नित् के परे तदन्त शब्द को नित्य आदि उदात्त होता है।

उदाहरण- इसका उदाहरण है - यस्मिन् विश्वानि पौंस्या (ऋ.१.६.९) इति, सुते दधिष्व नश्चनः (ऋ.१-३-६) इति।

सूत्र अर्थ का समन्वय- पुंसः कर्म इस अर्थ में 'गुणवचनब्राह्मणादिभ्यः ष्यञ्कर्मणि च' इससे पुंस्-शब्द से ष्यञ् प्रत्यय करने पर 'पौंसानि' यह पद निष्पन्न होता है। ष्यञ् प्रत्यय के ञकार की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' इससे लोप होता है, अतः शेष जो 'ष्य' उसको ञित् कहते है। इस प्रकार ञित् के परे उस पौंस्यानि इसके आदि अच् औकार की प्रकृत सूत्र से उदात्त स्वर होता है। वेद में पौंस्यानि यहाँ पर 'सुपां सुलुक् पूर्वसवर्णाच्छेयाडाड्यायाजालः' इससे प्रथमा बहुवचन में डा प्रत्यत्य करने पर और प्रक्रिया कार्य में पौंस्या यह रूप बनता है।

चायृ पूजानिशामनयोः इस धातु को 'चायतेरन्ने ह्रस्वश्च' इस उणादिक सूत्र से असुन् प्रत्यय करने पर आकार के अकार में नुडागम अनुबन्ध लोप करने पर 'चय् न् अस्' इस स्थिति में 'लोपो व्योर्वलि' इससे यकार का लोप करने की प्रक्रिया में 'चनः' यह रूप बनता है। यहाँ असुन् प्रत्यय के नकार की इत्संज्ञा होती है, अतः असुन् प्रत्यय नित् होता है, उस नित में असुन्प्रत्यय के परे उस चनः इसके आदि अच् अकार की प्रकृत सूत्र से उदात्त स्वर होता है।

विशेष- पुंस्-शब्द का यद्यपि ब्राह्मणादिगण में पाठ नहीं है, फिर भी ब्राह्मणादेराकृतिगण होने से पुंस्-शब्द का यहाँ ही ग्रहण है। आकृति के स्वरूप से यहाँ शब्दों का ग्रहण होता है वह आकृतिगण है।

10.10 अन्तश्च तवै युगपत्॥ (६.१.२००)

सूत्र का अर्थ- तवै-प्रत्ययान्त शब्द का अन्त और आदि को एक साथ उदात्त होता है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से उदात्त स्वर होता है। इस सूत्र में चार पद है। अन्तः यह प्रथमा एकवचनान्त, च यह अव्ययपद, तवै यहाँ पर लुप्त प्रथमान्त निर्देश है, युगपद् यह अव्यय पद है। यहाँ तवै- इस प्रत्यय विशेष का ग्रहण है, उस प्रत्यय ग्रहण में 'तदन्ताः ग्राह्याः' इस परिभाषा से तवै-प्रत्ययान्त की यहाँ पर प्राप्ति होती है। 'ञ्नित्यादिर्नित्यम्' इस सूत्र से आदि इसकी अनुवृति आती है। इस सूत्र में 'कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः' इस सूत्र से उदात्तः इस प्रथमान्त पद की अनुवृति आती है। यहाँ पर उदात्तः प्रथमान्त होने से यह विधायक पद है ऐसा जाना जाता

है। उससे इस सूत्र का अर्थ होता है तवै-प्रत्ययान्त के आदि और अन्त दोनों को एक साथ उदात्त होता है।

उदाहरण- इसका उदाहरण है - नानंसे यातवै (तै. सं ६-२-६-१)। इति।

सूत्र अर्थ का समन्वय- यहाँ या धातु से 'कृत्यार्थे तवैकेन्केन्यत्वन:' इससे तवै-प्रत्यय होने से यातवै यह रूप हुआ। इस प्रकार यातवै इसके तवै-प्रत्ययान्त होने से उसका आदि स्वर यकार से उत्तर अकार और अन्त स्वर वकार से उत्तर ऐकार की एक साथ इस सूत्र से उदात्त संज्ञा हुई।

विशेष- इस सूत्र में युगपद् ग्रहण पर्याय की निवृत्ति के लिए है। उससे यहाँ एक पक्ष में आदि उदात्त अन्य पक्ष में अन्त उदात्त का क्रम से यहाँ विधान नहीं होगा, और भी युगपत से ही आदि और अन्त में उदात्त स्वर का विधान होगा।

10.11 क्षयो निवासे॥ (६.१.२०१)

सूत्र का अर्थ- क्षय शब्द आद्युदात्त होता है निवास अभिधेय होने पर।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से उदात्त स्वर का विधान है। इस सूत्र में दो पद है। क्षय: प्रथमा एकवचनान्त, निवासे यह सप्तमी एकवचनान्त पद है। क्षय इस शब्द स्वरूप का ग्रहण है। निवास यह अर्थ निर्देश है। 'ञ्नित्यादिर्नित्यम्' इस सूत्र से आदि इसकी अनुवृति आती है। इस सूत्र में 'कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्त:' इस सूत्र से उदात्त: इस प्रथमान्त पद की अनुवृति आती है। उदात्त: यह यहाँ पर प्रथमान्त होने से विधायक पद है ऐसा जाना जाता है। उससे इस सूत्र का यह अर्थ होता है- क्षय शब्द का आदि उदात्त होता है निवास अर्थ में।

उदाहरण- स्वे क्षयें शुचिव्रत। (तै.ब्रा. १-४-१-७)।

सूत्र अर्थ का समन्वय- क्षि निवासगत्यो: इस क्षि धातु के दो अर्थ है। वहाँ निवास अर्थ में क्षियन्ति निवसन्ति इस प्रकार के विग्रह में अधिकरण क्षि धातु को 'पुंसि संज्ञायां घ: प्रायेण' इससे घ प्रत्यय की प्रक्रिया में क्षय शब्द सिद्ध होता है। यहाँ क्षय शब्द का निवास अर्थ में विद्यमान होने से प्रकृत सूत्र से आदि में षकार से उत्तर अकार का उदात्त स्वर सिद्ध होता है।

10.12 वृषादीनां च॥ (६.१.२०३)

सूत्र का अर्थ- वृषादि शब्दों के भी आदि उदात्त होता है वृषादि गण एक आकृतिगण है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से उदात्त स्वर होता है। इस सूत्र में दो पद है। वृषादीनाम् यह षष्ठी बहुवचनान्त है, च यह अव्ययपद है। वृष: आदि में है जिसके वह वृषादि, उन वृषादि का समूह। वृषादि एक गण है।

वृषादिगण में उन वृष-जन-त्वर-हय-गय-नय-तय-अंश-वेद-सूद-पद-गुहा: इत्यादि शब्द है। 'ञ्नित्यादिर्नित्यम्' इस सूत्र से आदि इसकी अनुवृति आती है। इस सूत्र में 'कर्षात्वतो घञोऽन्त

टिप्पणियाँ

उदात्तः' इस सूत्र से उदात्तः इस प्रथमान्त पद की अनुवृति आ रही है। उदात्तः यह यहाँ पर प्रथमान्त होने से इसको विधायक पद जाना जाता है। उससे इस सूत्र का अर्थ होता है - वृषादिगण में पढ़े हुए शब्दों का आदि स्वर उदात्त होता।

उदाहरण- इसका उदाहरण है - वृषो अग्निः समिध्यते। (तै.ब्रा. २-४-६-१०)।

सूत्र अर्थ का समन्वय- वृषु सेचने इति धातोः इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः इत्यनेन सूत्रेण कप्रत्यये वृषशब्दः निष्पद्यते। अत्र प्रत्ययस्वरः अर्थात् आद्युदात्तश्च इत्यनेन ककारोत्तस्य अकारस्य उदात्तः प्राप्तः आसीत् तेन वृषशब्दः अन्तोदात्तः अभवत्। परन्तु तं बाधित्वा वृषशब्दस्य वृषादिगणे पाठात् वृषादीनां च इत्यनेन अस्य आदेः वकारोत्तरस्य ऋकारस्य आद्युदात्तस्वरः भवति।

विशेष- वृषदिगण एक आकृतिगण है। उससे जिस शब्द का यहाँ पाठ नहीं है, और भी किसी भी सूत्र से आद्युदात्त स्वर नहीं किया है। फिर भी आद्युदात्त स्वर है। अत उस आकृति की भी इस वृषादिगण में पाठ स्वीकार करना चाहिए।

पाठगत प्रश्न 10.2

1. कर्षात्वतः यहाँ पर कर्ष शब्द से कैसे तुदादिगण की धातु का ग्रहण नहीं है?
2. 'उञ्छादिगण' में कितने गणसूत्र है?
3. पुंस्-शब्द का ब्राह्मण आदि गण में पाठ कैसे हैं?
4. अन्तश्च तवै युगपद् यहाँ पर युगपद् ग्रहण किस लिए किया है?
5. क्षय शब्द किस अर्थ में आदि उदात्त होता है?
6. 'वृषो अग्निः समिध्यते' यहाँ पर वकार से उत्तर ऋकार का किस सूत्र से उदात्त स्वर है?

10.13 संज्ञायामुपमानम्॥ (६.१.२०४)

सूत्र का अर्थ- उपमानवाची शब्द को संज्ञा विषय में आदि उदात्त होता है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। संज्ञायाम् यह सप्तमी एकवचनान्त, उपमानम् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। इस सूत्र में 'ञ्नित्यादिर्नित्यम्' इस सूत्र से आदिः इसकी अनुवृति आ रही है। यहाँ 'कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः' इस सूत्र से उदात्तः इस प्रथमान्त पद की अनुवृति आती है। उदात्तः यहाँ पर प्रथमान्त पद होने से यह विधायक पद है ऐसा जाना जाता है। उससे इस सूत्र का अर्थ होता है - संज्ञा में उपमान शब्द का आदि अच् उदात्त होता है।

उदाहरण- चञ्चेव चञ्चा इति।

सूत्र अर्थ का समन्वय- चञ्चा-शब्द का अर्थ घास से निर्मित पुरुष के लिए है। चञ्चा के समान पुरुष भी चञ्चा ही होता है। वहाँ चञ्चा-शब्द से 'इवे प्रतिकृतौ' इस सूत्र से किये गए कन् प्रत्यय का 'लुम्मनुष्ये' इस सूत्र से लोप होता है। इस प्रकार यहाँ चञ्चा-शब्द की उपमानवाचक और संज्ञावाचक होने से प्रकृत सूत्र से उसके आदि में अच् चकार से उत्तर अकार को उदात्त स्वर होता है।

विशेष- चञ्चा-शब्द से कन् प्रत्यय करने पर और अनुबन्ध लोप करने पर चञ्चा क(कन्) इस स्थित्ति में कन्प्रत्यय के नकार की इत् संज्ञा होने से और उसका लोप होने पर 'प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम्' इससे कन्प्रत्यय नित् होता है। उस नित् के परे पूर्व के चकार से उत्तर अकार की तो 'ञ्नित्यादिर्नित्यम्' इससे ही आद्युदात्त स्वर सिद्ध होता है, उस प्रकृत-सूत्र से आद्युदात्त स्वर विधान की क्या आवश्यकता है यदि कोई ऐसा कहता है तो - यह ही ज्ञापक है की वेद में कुछ स्वर विधि में प्रत्यय के लोप होने पर 'प्रत्ययलक्षणम' से ग्रहण नहीं करते है। इसी प्रकार यहाँ प्रत्यय के लोप होने पर 'प्रत्ययलक्षणम्' इसके ग्रहण अभाव में 'चञ्चा क' यहाँ पर नित्त् के अभाव से चकार से उत्तर अकार की 'ञ्नित्यादिर्नित्यम्' इससे आद्युदात्त स्वर सिद्ध नहीं होता है। उस आद्युदात्त स्वर के विधान के लिए प्रकृत सूत्र की रचना की है।

इस सूत्र में संज्ञायाम् कहने से जहाँ पर संज्ञा नहीं है, वहाँ पर इस सूत्र की प्रवृति नहीं होती है, जैसे- अग्निर्माणवकः। यहाँ पर उपमान के होने पर भी संज्ञा नहीं है, अतः मकार से उत्तर अकार को उदात्त स्वर नहीं हुआ। और जहाँ उपमान नहीं है, वहाँ पर भी इस सूत्र की प्रवृति नहीं होती है, जैसे- चौत्रः इति, यहाँ पर संज्ञा के होने पर भी उपमान नहीं है। अतः यहाँ चकार से उत्तर ऐकार को उदात्त स्वर नहीं होता है।

10.14 अशितः कर्ता॥ (६.१.२०७)

सूत्र का अर्थ- कर्तृवाची अशित शब्द को आदि उदात्त होता है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से उदात्त स्वर होता है। इस सूत्र में दो पद है। अशितः यह प्रथमा एकवचनान्त, कर्ता यह भी प्रथमा एकवचनान्त पद है। इस सूत्र में 'ञ्नित्यादिर्नित्यम्' इस सूत्र से आदिः इसकी अनुवृति आती है। यहाँ पर 'कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः' इस सूत्र से उदात्तः इस प्रथमान्त पद की अनुवृति आती है। उदात्तः यहाँ पर प्रथमान्त होने से यह विधायक पद जाना जाता है। उससे इस सूत्र का अर्थ होता है- अशित शब्द जब कर्ता है, तब इस शब्द के आदि अच् को उदात्त होता है।

उदाहरण- कृषन्नित्फाल आशितम् इत्यस्य उदाहरणम्।

सूत्र अर्थ का समन्वय- आङ् पूर्वक अश् धातु से कर्ता में क्त प्रत्यय करने पर आशितम् यह रूप बनता है। यहाँ आशित शब्द कर्तृवाचक है। अतः उसके आदि में अच् अकार की प्रकृत सूत्र से उदात्त स्वर होता है।

टिप्पणियाँ

विशेष- आङ् पूर्वक अश्-धातु से कर्ता में क्त प्रत्यय विधान का कोई सूत्र नहीं है, तो कैसे क्त प्रत्यय है, यदि ऐसा कहते हैं तो यहाँ पर क्त प्रत्यय निपातन से है।

यहाँ अन्य वैयाकरण आचार्य - अश्-धातु से कर्ता में क्त प्रत्यय करने पर अशित शब्द को निष्पन्न करते है। तब तो क्त प्रत्यय और उपधा को दीर्घ दोनों ही निपातन से सिद्ध करते है।

10.15 युष्मदस्मदोर्ङसि॥ (६.१.२११)

सूत्र का अर्थ- युष्मद् अस्मद् शब्दों के आदि को ङस् परे रहते उदात्त होता है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से उदात्त स्वर का विधान है। इस सूत्र में दो पद है। युष्मदस्मदो: यह षष्ठी एकवचनान्त, ङसि यह सप्तमी एकवचनान्त पद है। ङसि का यहाँ पर सप्तमी निर्देश होने से 'तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य' इस परिभाषा से षष्ठी एकवचन के परे होने पर पूर्व का कार्य जानना चाहिए है। इस सूत्र में 'ञ्नित्यादिर्नित्यम्' इस सूत्र से आदि: इसकी अनुवृति आती है। यहाँ 'कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्त:' इस सूत्र से उदात्त: इस प्रथमान्त पद की अनुवृति आती है। उदात्त: का यहाँ प्रथमान्त पद होने से यह विधायक पद है, ऐसा जाना जाता है। उससे इस सूत्र का अर्थ होता है- ङस् के परे होने पर पूर्व के युष्मद् अस्मद् का आदि अच् उदात्त होता है।

उदाहरण- इस सूत्र का उदाहरण है - नहिषस्तव नो मम इति।

सूत्र अर्थ का समन्वय- युष्मद् शब्द से और अस्मद् शब्द से ङस्-प्रत्यय करने पर 'युष्मदस्मद्भ्यां ङशोऽश्' इससे ङश् को अश् आदेश होने पर 'तवममौ ङसि' इससे युष्मद् के म पर्यन्त को तव आदेश और अस्मद् के मपर्यन्त भाग को मम आदेश करने पर प्रक्रिया कार्य में 'तव मम' ये दो रूप सिद्ध होते है। यहाँ तव मम इन दोनों के ङस् अन्त में होने से उसके परे तकार से उत्तर अकार को और मकार से उत्तर अकार को प्रकृत सूत्र से उदात्त स्वर सिद्ध होता है।

10.16 ङयि च॥ (६.१.२११)

सूत्र का अर्थ- ङे विभक्ति के परे भी युष्मद् अस्मद् को आदि उदात्त होता है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से उदात्त स्वर का विधान है। यह सूत्र दो पद में है। ङयि यह सप्तमी एकवचनान्त। च यह अव्यय पद है। ङयि यहाँ पर सप्तमी का निर्देश होने से 'तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य' इस परिभाषा से चतुर्थी एकवचन के परे होने पर पूर्व का कार्य जानना चाहिए। इस सूत्र में 'ञ्नित्यादिर्नित्यम्' इस सूत्र से आदि: इसकी अनुवृति आती है। यहाँ पर 'कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्त:' इस सूत्र से उदात्त: इस प्रथमान्त पद की अनुवृति आती है। उदात्त: यहाँ पर प्रथमान्त होने से इसको विधायक पद जाना जाता है। उससे इस सूत्र का अर्थ होता है - ङयि के परे होने पर पूर्व के युष्मद् अस्मद् का आदि अच् उदात्त होता है।

उदाहरण- इस सूत्र का उदाहरण है - तुभ्यं हिन्वान: इति। मह्यं वात: पवताम् इति च।

सूत्र अर्थ का समन्वय- युष्मद् शब्द से और अस्मद् शब्द से ङे इस प्रत्यय के परे रहने पर 'ङे-प्रथमयोरम्' इससे ङे इसको अम आदेश होने पर 'तुभ्यमह्यौ ङयि' इससे युष्मद् के म पर्यन्त भाग को तुभ्य और अस्मद् के म पर्यन्त भाग को मह्य आदेश होने पर प्रक्रिया कार्य में 'तुभ्यं मह्यम्' ये दो रुप सिद्ध होते है। यहाँ 'तुभ्यं, मह्यम्' इन दोनों से ङे प्रत्ययान्त है। ङे इसके परे तुभ्यम् यहाँ तकार से उत्तर आदि अच् उकार को और मह्यम् यहाँ पर मकार से उत्तर आदि अच् अकार की प्रकृत सूत्र से उदात्त स्वर सिद्ध होता है।

10.17 यतोऽनावः॥ (६.१.११३)

सूत्र का अर्थ- यत् प्रत्ययान्त जो दो अचों वाले शब्द उनको आद्युदात्त होता है नौ शब्द को छोड़कर।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से उदात्त स्वर का विधान है। इस सूत्र में दो पद है। यतः, अनावः ये सूत्र में आये पदच्छेद हैं। यतः यह षष्ठी एकवचनान्त है। अनावः यह पञ्चमी एकवचनान्त पद है। यहाँ यत् यह प्रत्यय है। उस प्रत्यय ग्रहण करने से 'तदन्तग्रहण' इससे उसका ग्रहण होगा। उससे यत् प्रत्ययान्त का यह अर्थ है। अनावः इसका नौ इस शब्द को छोड़कर यह अर्थ है। इस सूत्र में 'निष्ठा च द्व्यजनात्' इस सूत्र से द्व्यच् इसकी अनुवृत्ति आती है। वह यहाँ पर पञ्चम्यन्त से विपरीत है। इस प्रकार इस सूत्र का अर्थ होता है- यत्प्रत्ययान्त का दो अचो से युक्त शब्द का आदि अच् उदात्त होता है, नौ शब्द को नहीं होता है।

उदाहरण- युञ्जन्त्यस्य काम्या इति।

सूत्र अर्थ का समन्वय- कमु कान्तौ इस धातु से 'कमेर्णिङ्' इससे स्वार्थ में णिङ् प्रत्यय तथा अनुबन्ध लोप करने पर 'अत उपधायाः' इससे कम्-धातु के ककार से उत्तर अकार के स्थान में वृद्धि करने पर आकार में निष्पन्न कामि इसकी 'सनाद्यन्ता धातवः' इससे धातु संज्ञा सिद्ध होती है। उसके बाद अजन्त कामि-धातु से 'अचो यत्' इससे यत्प्रत्यय तथा अनुबन्ध लोप करने पर 'णेरनिटि' इससे मकार से उत्तर णिङः के इकार का लोप करने पर प्रथमा द्विवचन प्रक्रिया कार्य में काम्या यह रूप सिद्ध होता है। यहाँ काम्या इसका यत् प्रत्ययान्त होने से और यत्प्रत्यय के तकार की इत् संज्ञा होने से 'तित्स्वरितम्' इससे स्वरित स्वर की प्राप्ति थी। परन्तु उसको बाध करके प्रकृत सूत्र से दो अचों से युक्त काम्या इसका आदि अच् ककार से उत्तर आकार को उदात्त स्वर होता है।

नवतिं; नाव्यानाम् इत्यादि में नावा तार्यम् यह विग्रह करने पर 'नौवयोधर्मविषमूलमूल सीतातुलाभ्यस्तार्यतुल्यप्राप्य-वध्यानाम्यसमसमितसम्मितेषु' इससे यत्प्रत्यय करने पर निष्पन्न नाव्य शब्द का षष्ठी बहुवचनान्त रूप है। परन्तु प्रकृत सूत्र में अनावः कहने से नाव्यानाम इसके आदि अच् नकार से उत्तर आकार को प्रकृत सूत्र से उदात्त स्वर नहीं होता है।

विशेष- आठवें अध्याय में 'निष्ठा च द्व्यजनात्' इससे परे सात सूत्र है, उसके बाद 'यतोऽनावः' यह प्रकृत सूत्र है। इस प्रकार मध्यवर्ति सूत्रों में 'निष्ठा च द्व्यजनात्' इस सूत्र से 'द्व्यच्' इसकी अनुवृत्ति नहीं है, परन्तु इस सूत्र में 'द्व्यच्' इसकी अनुवृत्ति कैसे यदि कोई ऐसा कहता है तो

'मण्डूकप्लुत' (मेंढक की) गति से यहाँ अनुवृत्ति है। मेंढक जैसे उछल-उछल कर कुछ-कुछ स्थान को छोड़कर जाता है, वैसे ही यह भी कुछ-कुछ सूत्रों को छोड़कर उत्तर उत्तर के सूत्रों में प्रवृत्त होता ऐसा जानना चाहिए।

पाठगत प्रश्न 10.3

1. उपमान शब्द कब आद्युदात्त होता है?
2. किस प्रकार का अशित शब्द आद्युदात्त है?
3. मम यहाँ पर मकार से उत्तर अकार को उदात्त स्वर किससे सिद्ध होता है?
4. ङयि च इस सूत्र का क्या अर्थ है?
5. यतोऽनावः इस सूत्र में अनावः यहाँ पर कौनसी विभक्ति है?

पाठ का सार

धातु का और प्रातिपदिक के स्वरों को अवलम्बन करके इस पाठ की रचना की है। धातु से विहित स्वरों के विषय में कुछ सूत्रों की आलोचना की है। और इसी प्रकार प्रातिपदिक से विहित स्वरों के विषय में कुछ सूत्रों की आलोचना है। धातु से विहित स्वरों के विषय में सूत्र है, जैसे - धातोः, स्वपादिहिंसामच्यनिटि इत्यादि सूत्र है। धातोः इस सूत्र से धातु अन्त उदात्त है। इसका उदाहरण है - गोपायर्त नः इति, असिं सत्यः इति। यहाँ गुप्-इस धातु से आय प्रत्यय करने पर उससे निष्पन्न गोपाय इसके पकार से उत्तर आकार को 'आद्युदात्तश्च' इससे आद्युदात्त स्वर है। 'सनाद्यन्ता धातवः' इससे गोपाय इसकी धातु संज्ञा है, अतः उसके अन्त अकार की भी प्रकृत सूत्र से उदात्त स्वर होता है। प्रातिपदिक से विहित स्वरों के विषय में सूत्र है, जैसे - 'कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः, उञ्छादीनाञ्च इत्यादि सूत्र है। इसका उदाहरण है, कर्षः इति, दायः इति च। कृष विलेखने इस धातु से घञ्प्रत्यय करने पर कर्षः यह रूप बनता है। यहाँ घञन्त कर्ष-इसके अन्त का षकार से उत्तर अकार को प्रकृत सूत्र से उदात्त स्वर होता है। दा दाने इस आकार युक्त धातु से 'आतो युक्चिण्कृतोः' इससे घञ्प्रत्यय करने पर दायः यह रूप बनता है। यहाँ आकारान्त घञन्त के होने से दाय-इसके अन्त का यकार से उत्तर अकार का प्रकृत सूत्र से उदात्त स्वर सिद्ध होता है।

पाठांत प्रश्न

1. स्वपादिहिंसामच्यनिटि इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
2. अभ्यस्तानामादिः इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
3. कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।

4. ञ्नित्यादिर्नित्यम् इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
5. वृषादीनां च इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
6. संज्ञायामुपमानम् इससे उदात्त स्वर विधान के फल का वर्णन कीजिए।
7. यतोऽनावः इसका एक उदाहरण को प्रदर्शित करके समन्वय कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

10.1

1. उदात्त स्वर।
2. अदादि गण के अन्तर्गत एक गण है।
3. अनिट् अजादि में लसार्वधातुके के परे अभ्यस्त का आदि उदात्त होता है।
4. अविद्यमान उदात्त इस अर्थ में।
5. उदात्त स्वर है।
6. लिति इस सूत्र से।

10.2

1. शप् प्रत्यय के निर्देश से।
2. आठ सूत्रों में।
3. ब्राह्मण आदि आकृतिगण होने से।
4. पर्यायवाची की निवृत्ति के लिए।
5. निवास अर्थ में।
6. वृषादीनां च इस सूत्र से।

10.3

1. उपमान शब्द जब संज्ञावाचक है तब।
2. कर्तावाची अशित शब्द।
3. 'युष्मदस्मदोर्ङसि' इस सूत्र से।
4. ङे विभक्ति के परे होने पर युष्मद् अस्मद् को आदि उदात्त होता है।
5. पञ्चमी विभक्ति।

॥ दसवां पाठ समाप्त॥